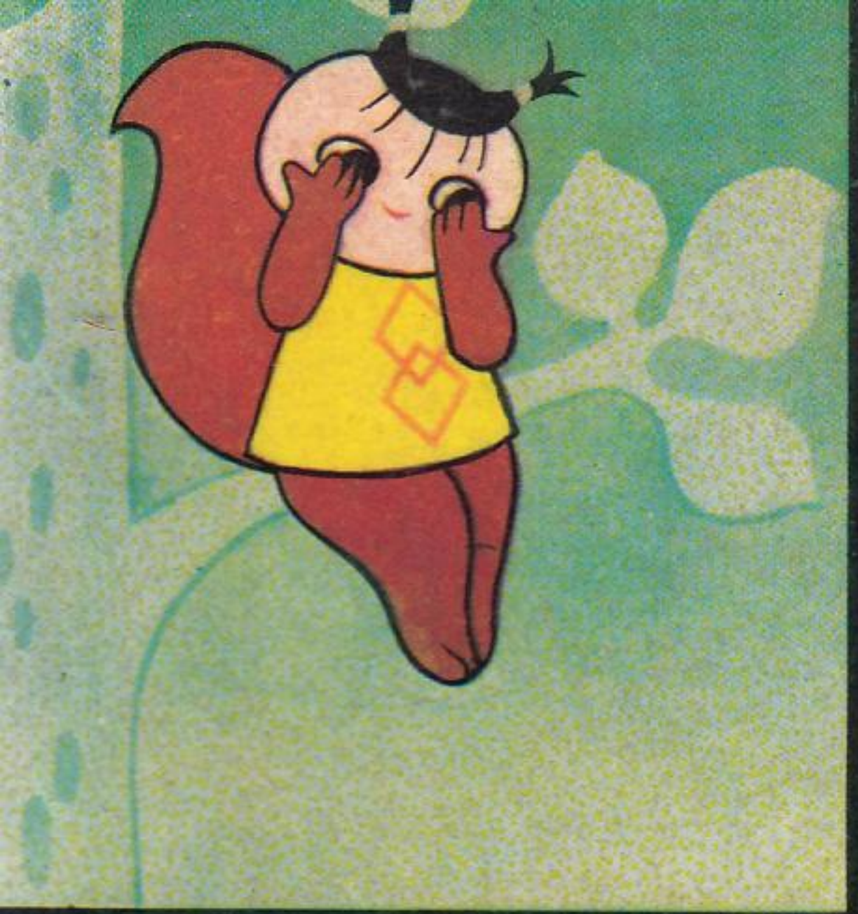

गूंज

5/50

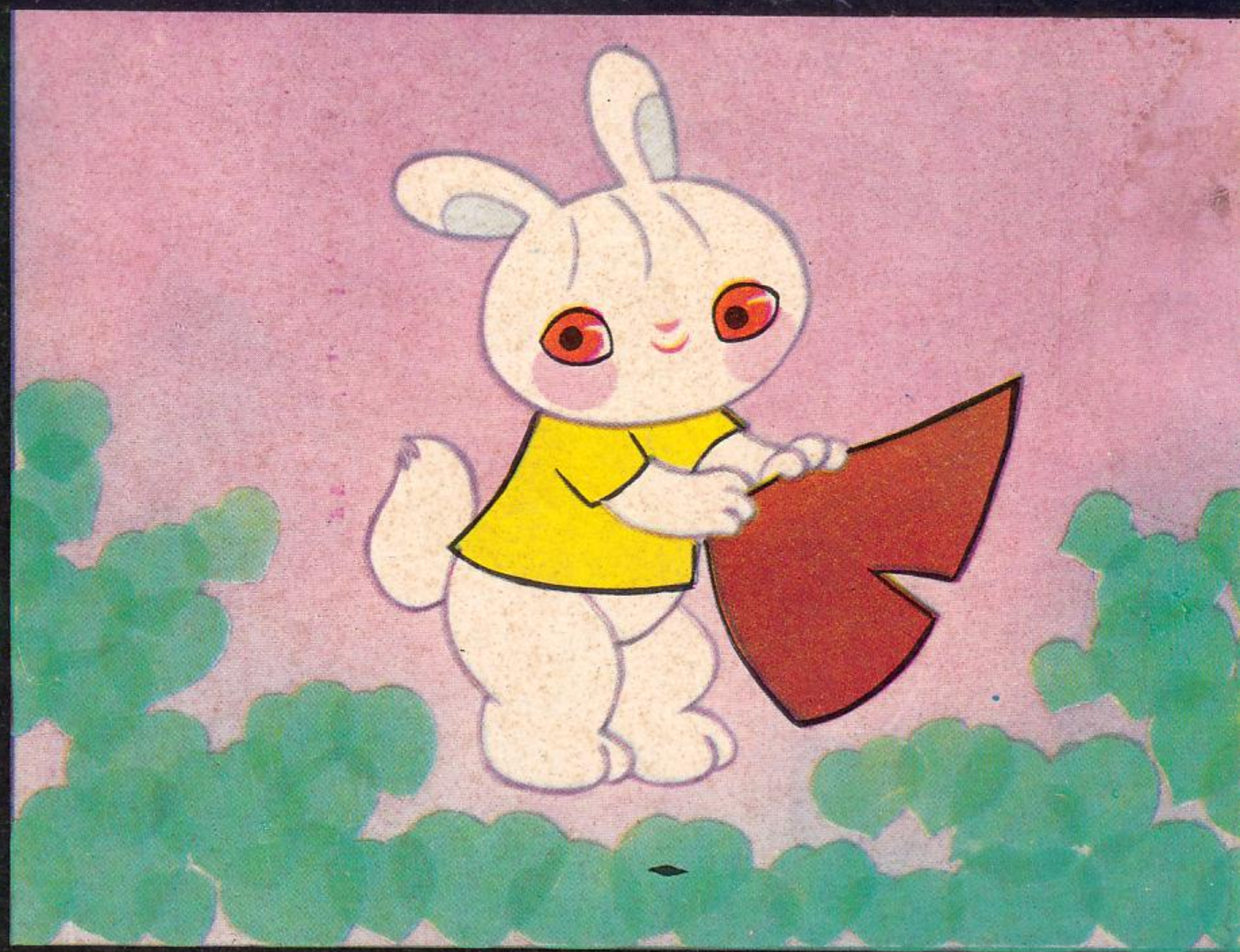

ज्ञान-विज्ञान

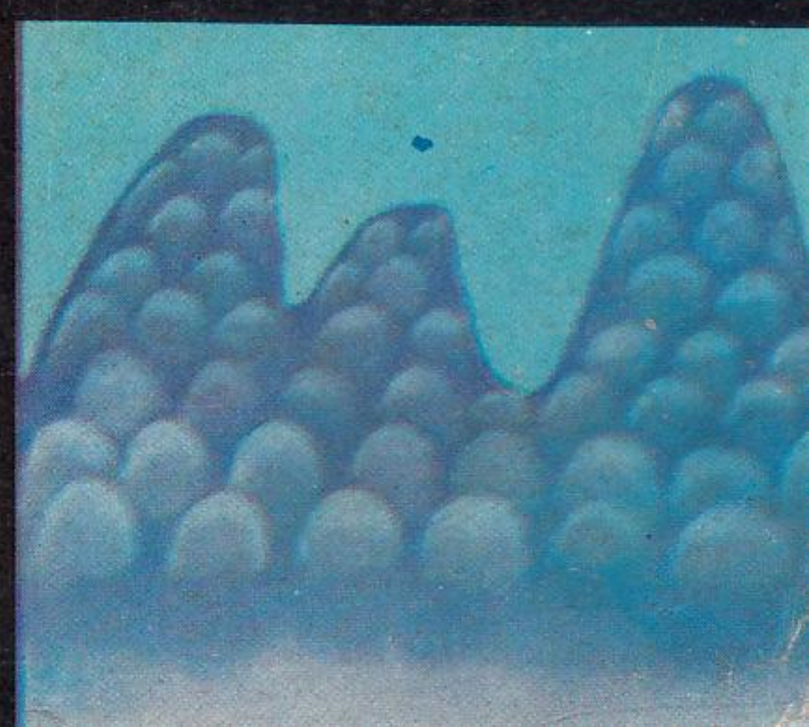

रूपान्तरकार व चित्रंकार : **मेइ थिङ**

गुंज

डॉलफिन प्रकाशन पेइचिङ

प्रथम संस्करण १९८७

प्रकाशक : **डॉलफिन प्रकाशन**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ
वितरक : **चीन अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

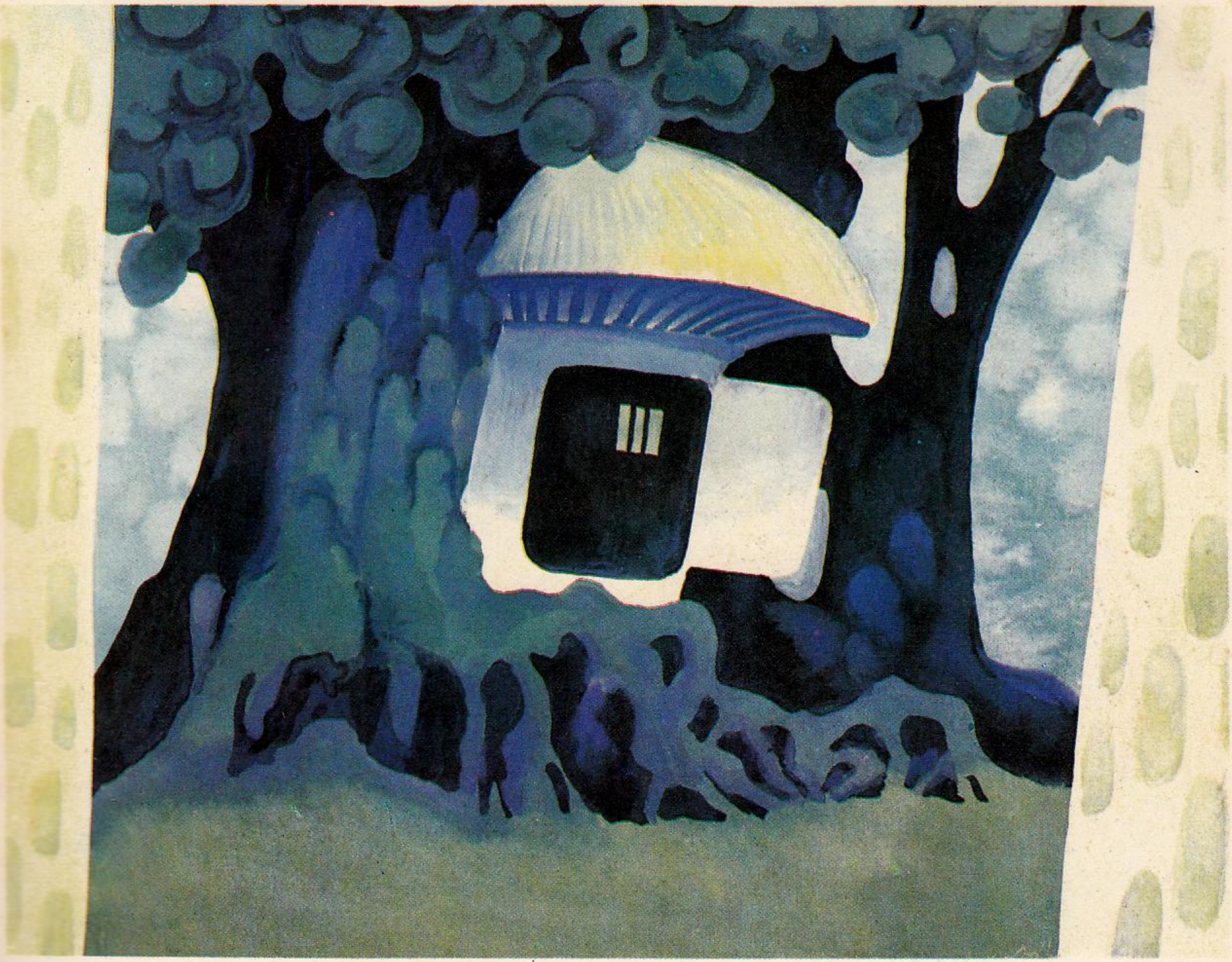

यह नन्हे खरगोश थाम्रो थाम्रो का घर है।

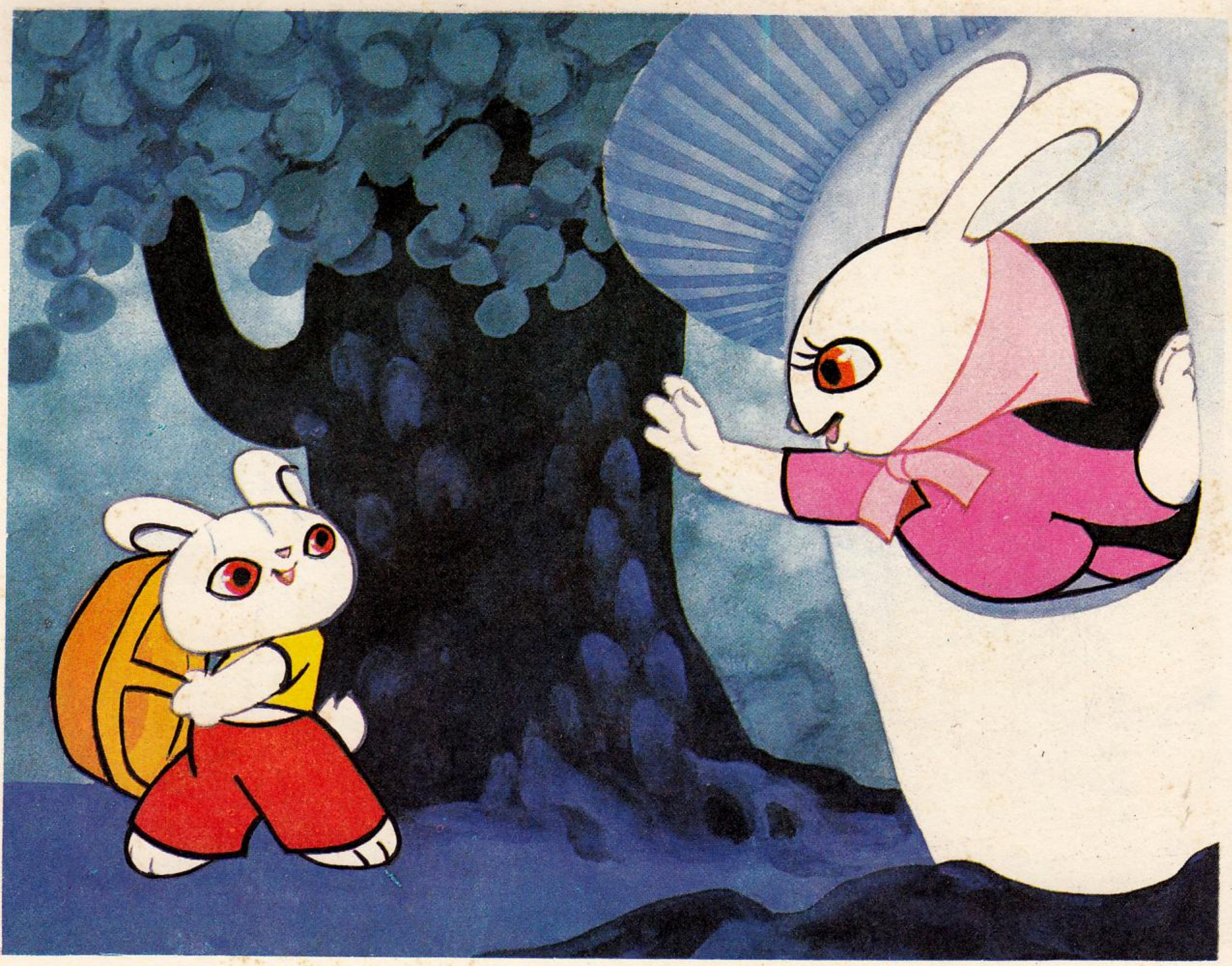

एक दिन थाओ थाओ अपनी टोकरी लेकर कुकुरमुत्ते चुनने जा रहा था। उसकी मां ने कहा : "बेटे, जल्दी वापस आ जाना!"

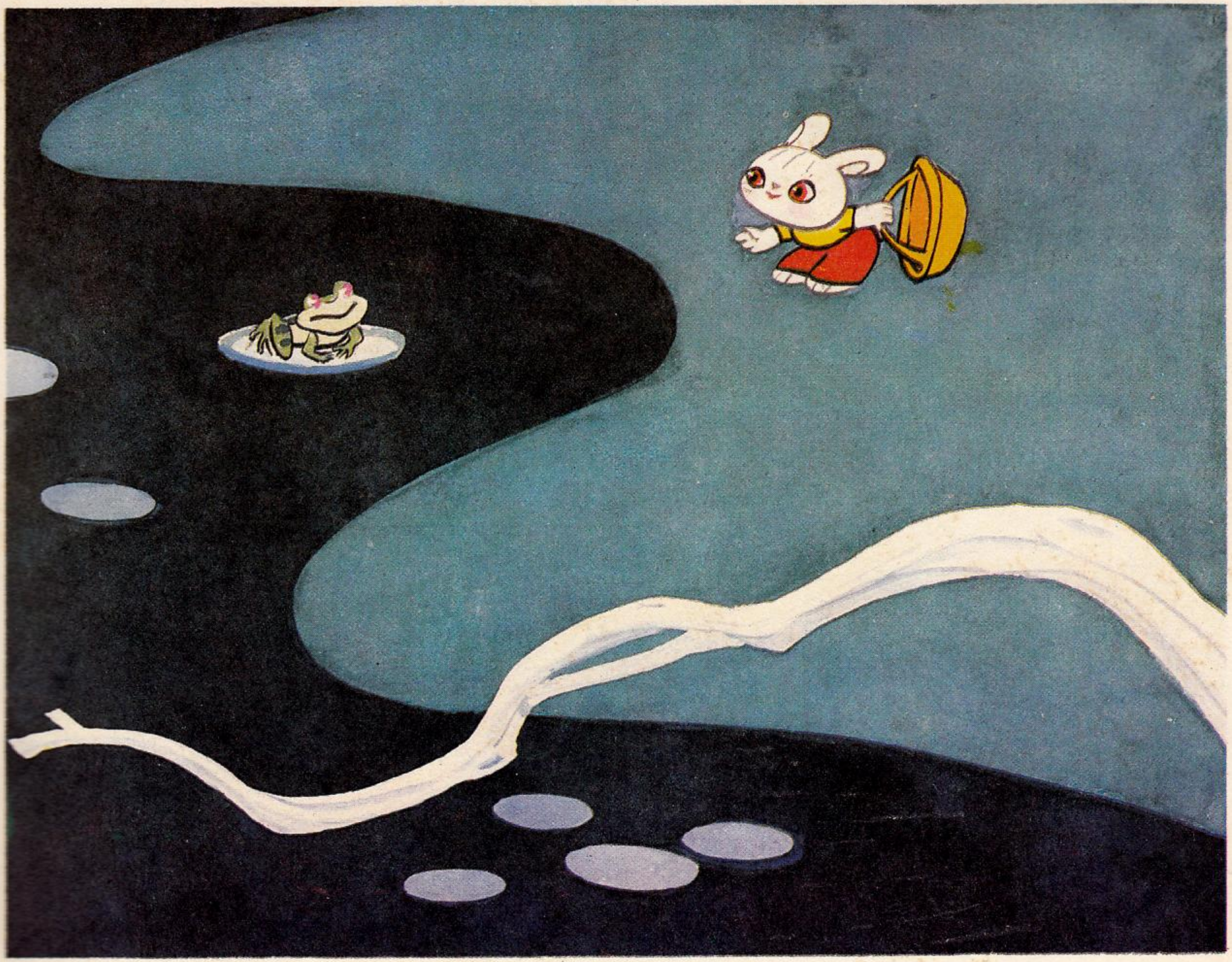

चलते-चलते थाम्रो थाम्रो एक झील के किनारे जा पहुंचा।

झील के किनारे एक पेड़ था, जिसकी टहनी पानी के ऊपर निकली हुई थी। थाम्रो थाम्रो उस टहनी को पकड़कर झूलने लगा।

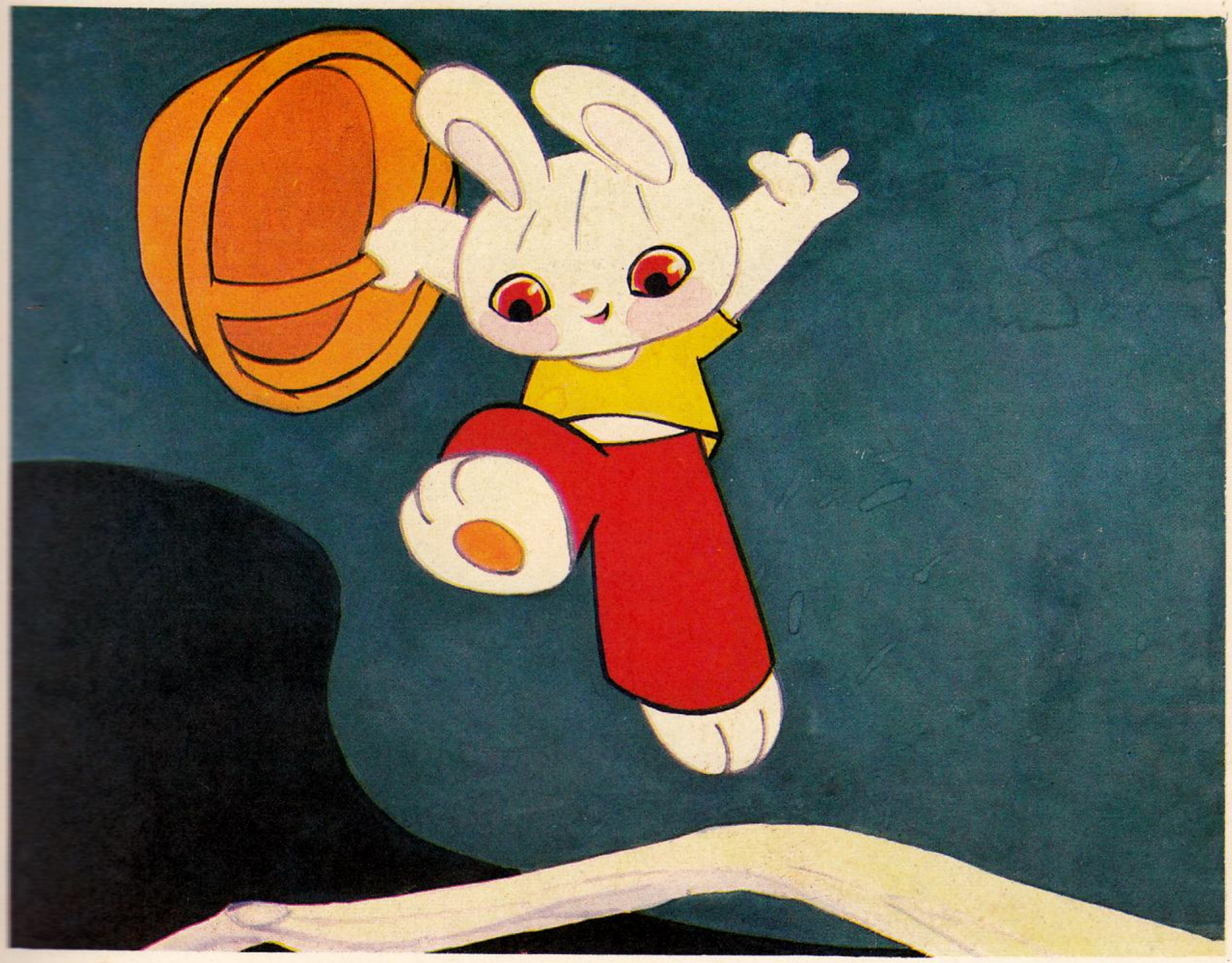

थाम्रो थाम्रो को झूलने में बड़ा मजा म्रा रहा था।

अचानक "छप" की आवाज के साथ थाओ थाओ पानी में गिर पड़ा और उसकी पतलून भीग गई।

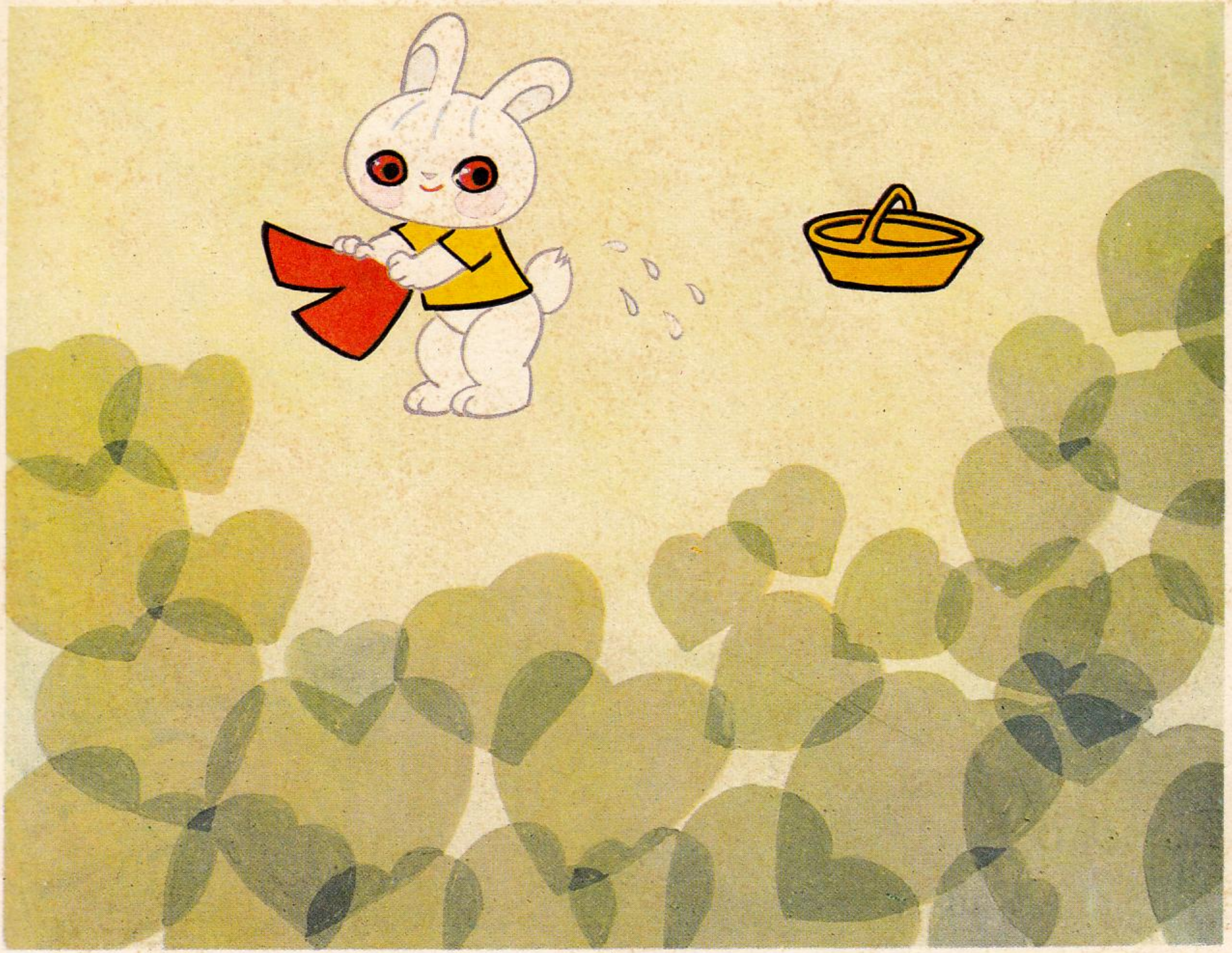

थाओ थाओ अपनी पतलून उतारकर सुखाने लगा।

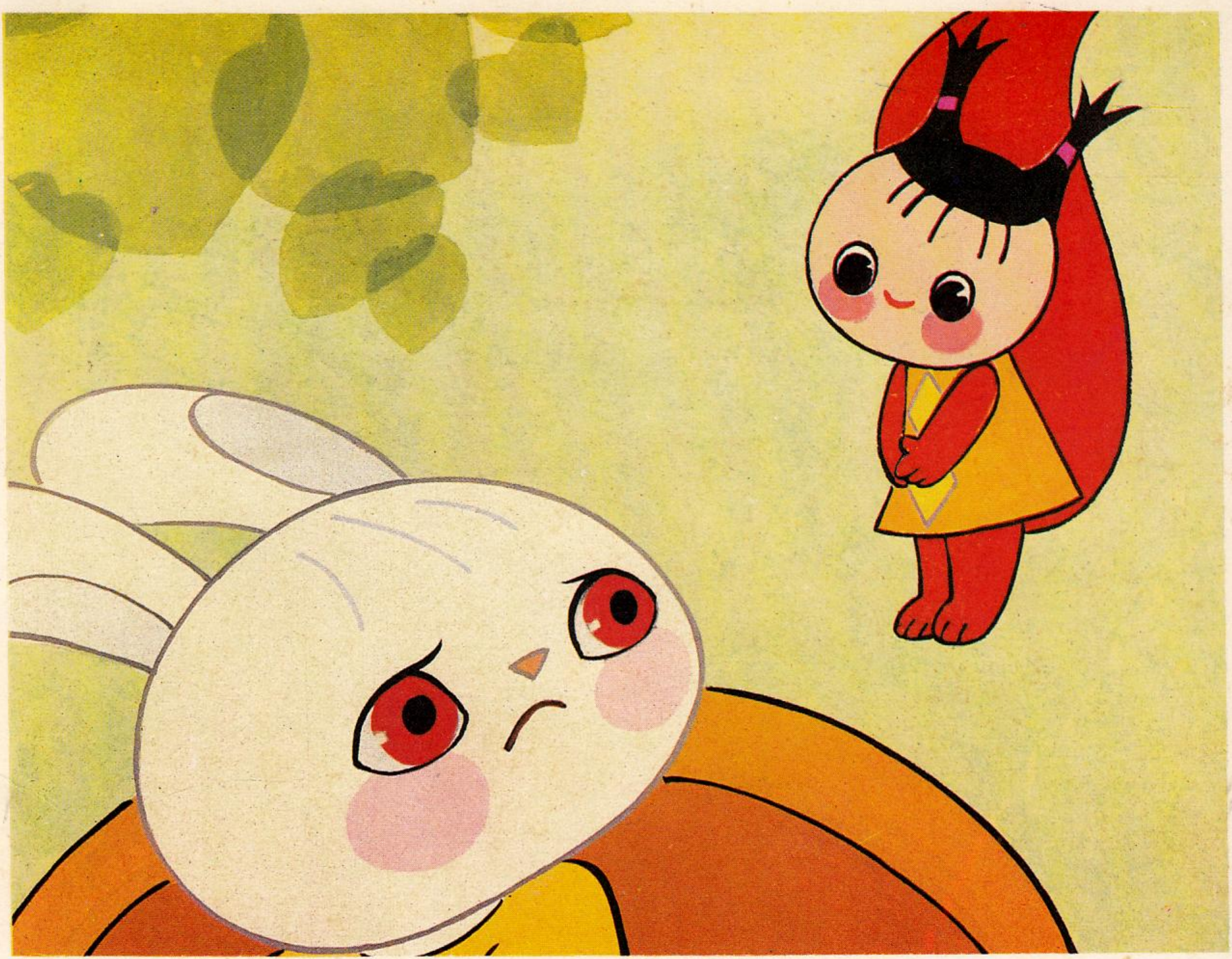

तभी एक गिलहरी वहां आ गई।

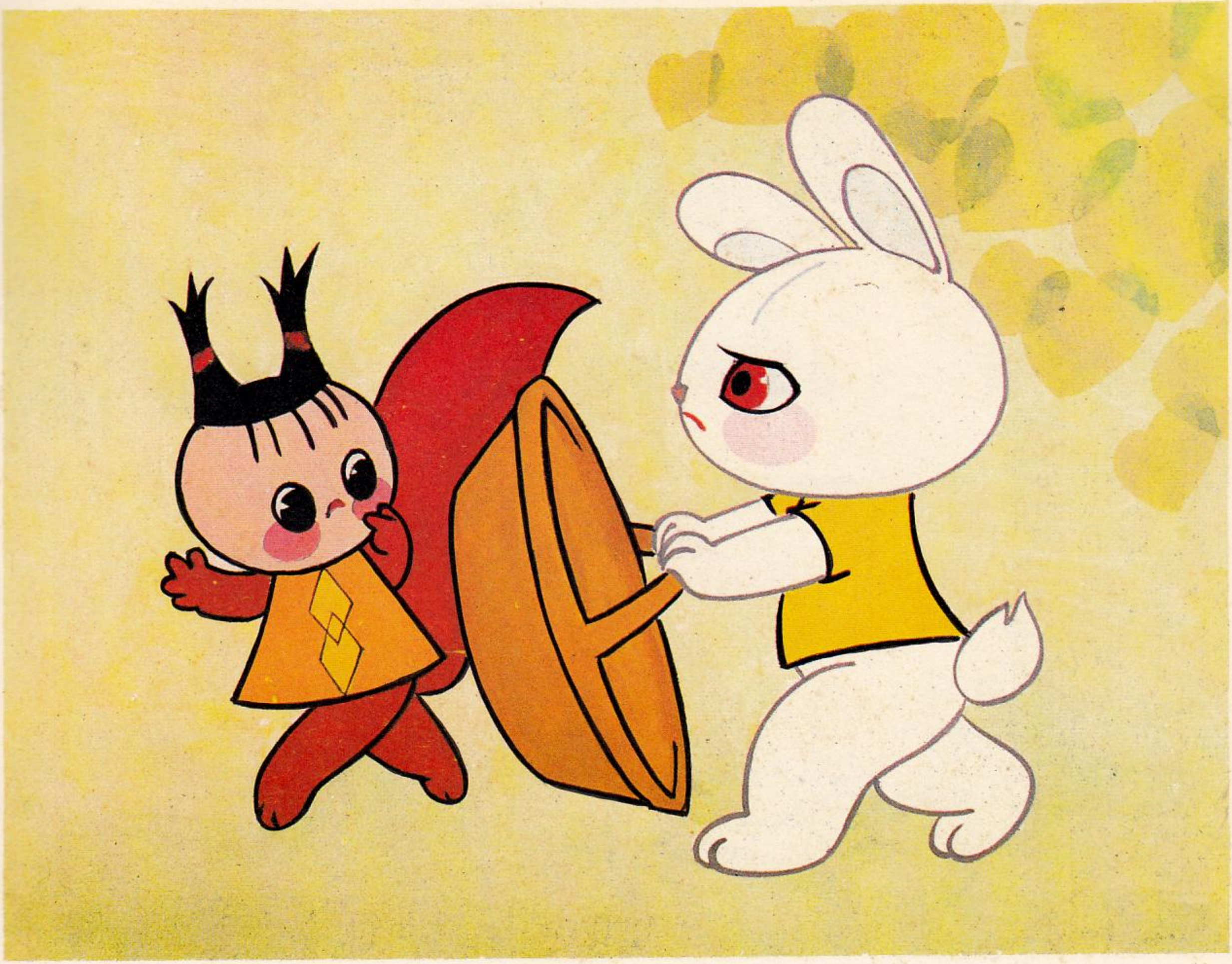

थाम्रो थाम्रो ने टोकरी की म्राड़ लेकर फौरन पतलून पहन ली म्रौर मुंह बनाकर वहां से चल दिया।

थाम्रो थाम्रो के मुंह बनाने पर गिलहरी को गुस्सा. म्रा गया ।

थाओ थाओ पहाड़ की ढलान पर जा पहुंचा। "ओहो! यहां तो बेशुमार कुकुरमुत्ते उगे हुए हैं!" यह कहता हुआ वह खुशी से उछल पड़ा।

थाम्रो थाम्रो कुकुरमुत्ते तोड़-तोड़कर टोकरी में फेकता गया।

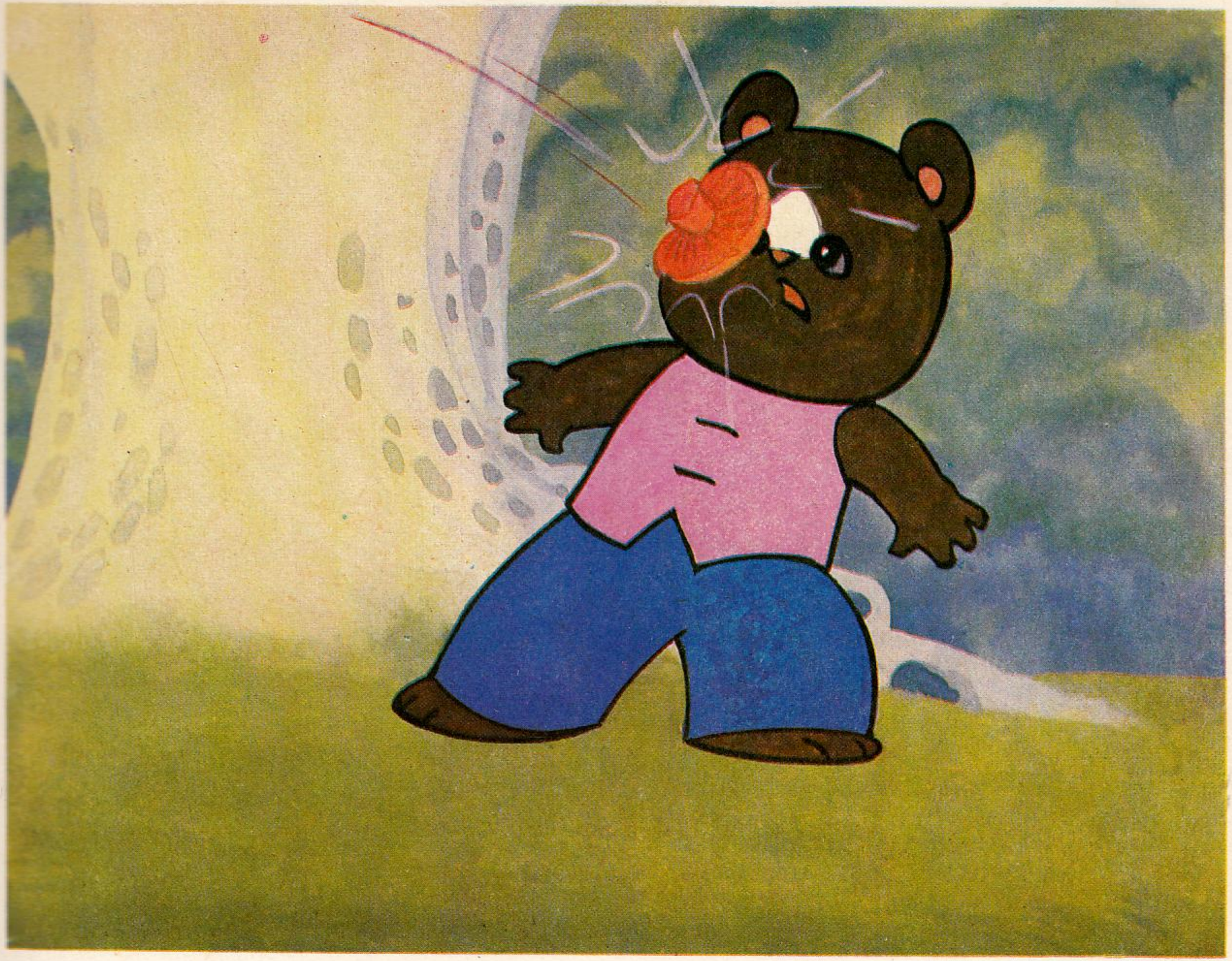

अचानक एक कुकुरमुत्ता भालू के चेहरे पर जा लगा।

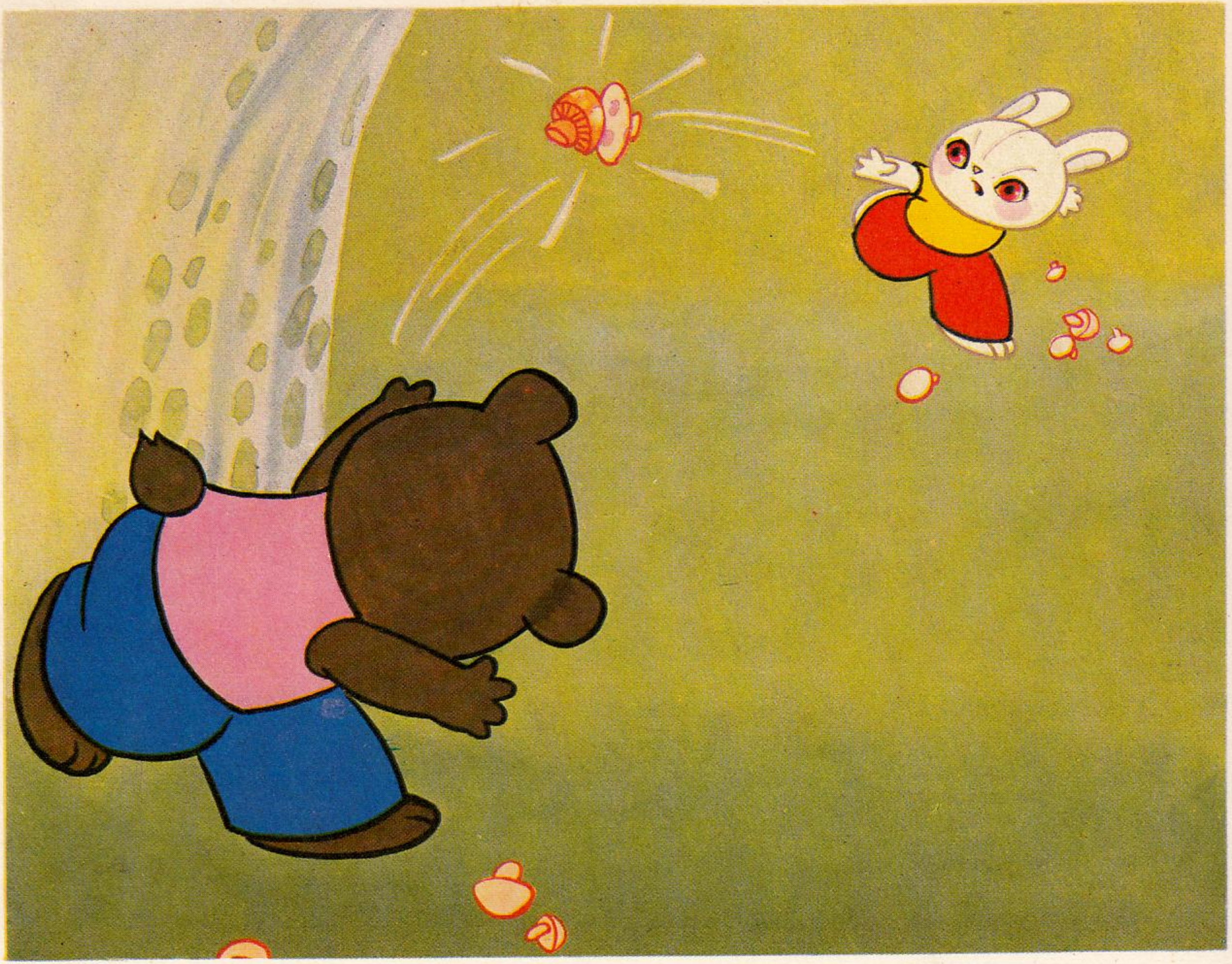

इससे भालू को गुस्सा आ गया और उसने भी एक कुकुरमुत्ता उठाकर थाओ थाओ के मुंह पर दे मारा।

थाओ थाओ वहां से भाग खड़ा हुआ और भालू उसकी टोकरी उठाकर चलता बना।

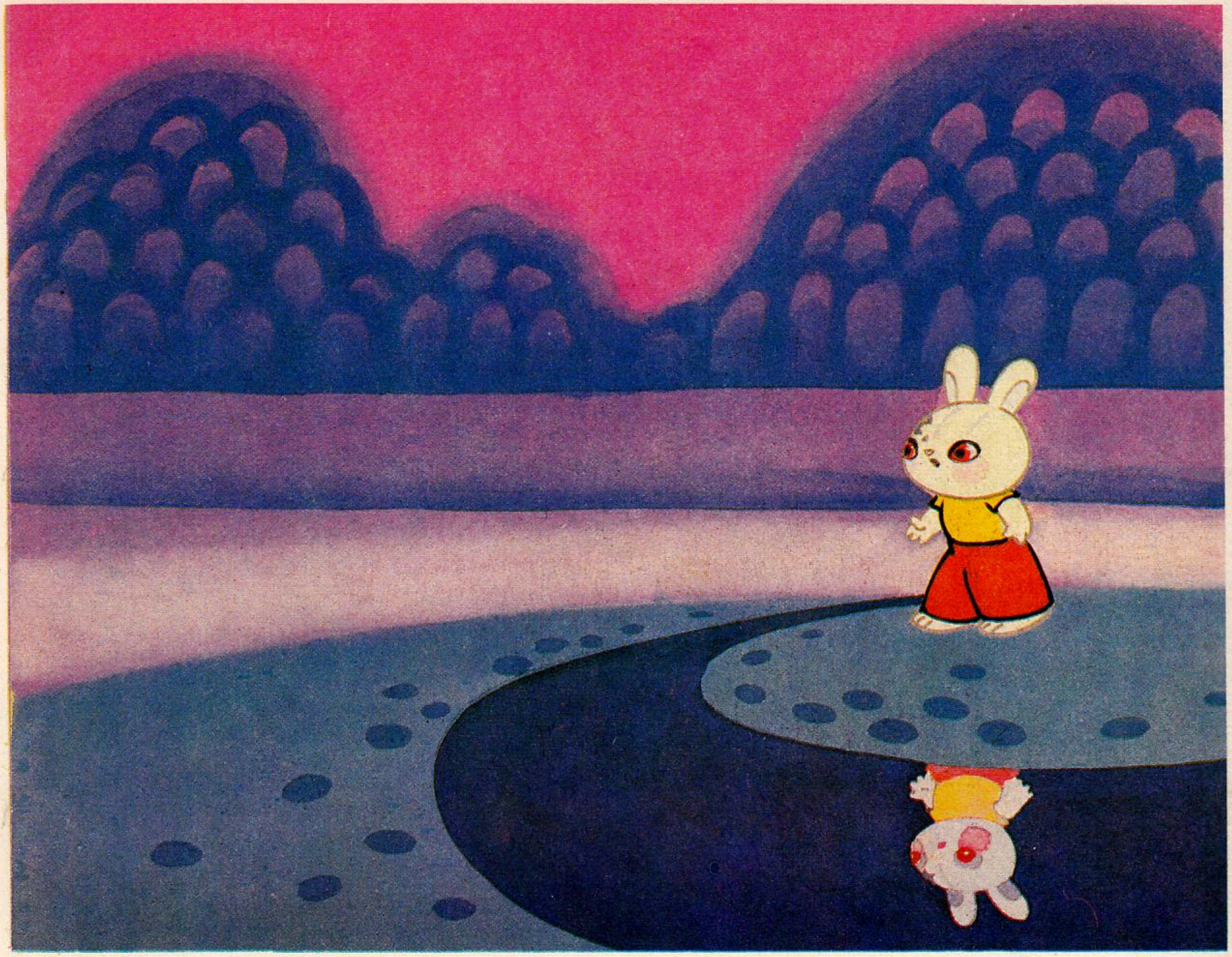

थाओ थाओ घाटी में एक तालाब के किनारे जा पहुंचा।

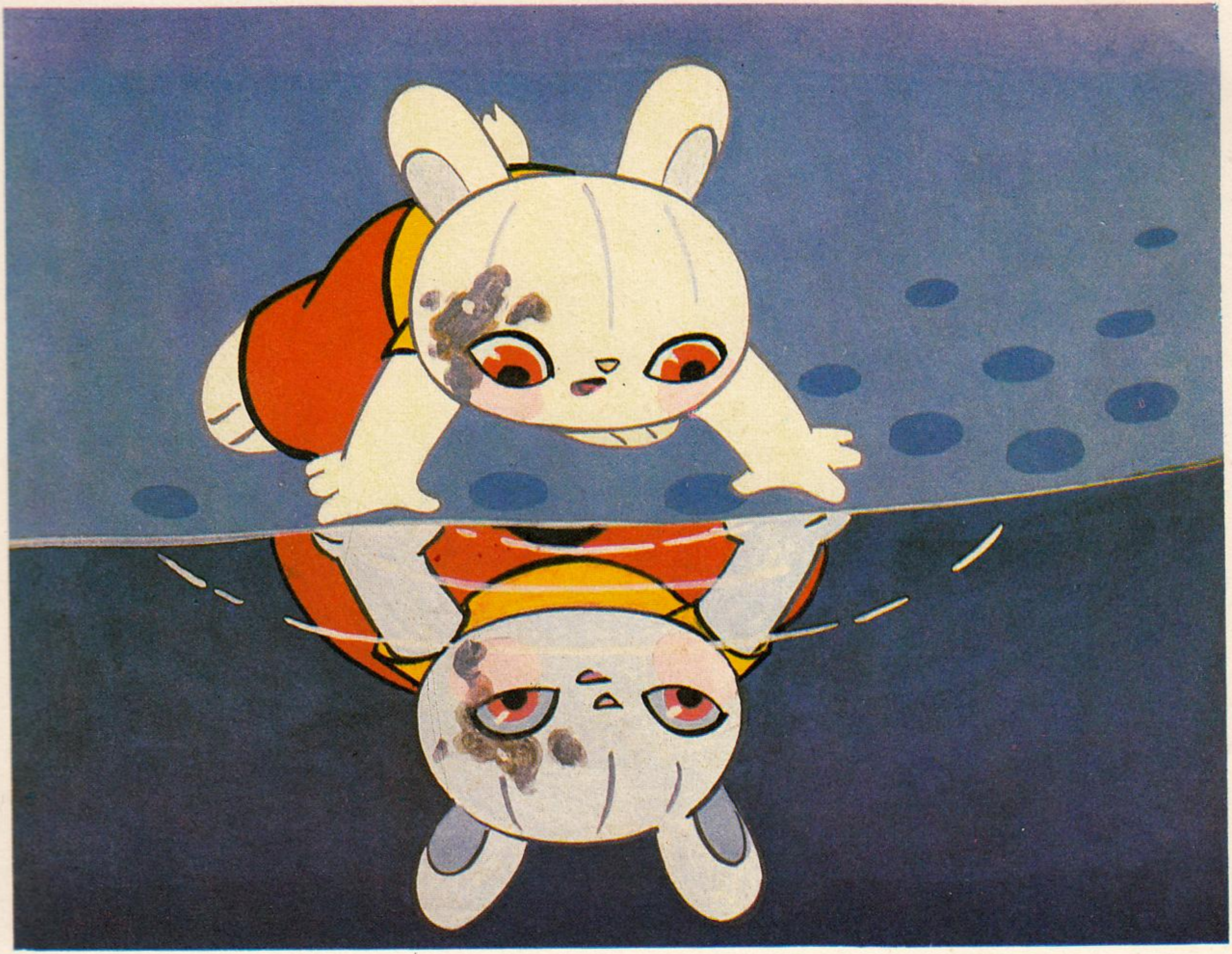

थाम्रो थाम्रो तालाब से पानी पीने लगा। उसे पानी में एक परछाई नजर आई, जिसका चेहरा बड़ा गंदा था। थाम्रो थाम्रो ने कहा : "ओह, कितना बदसूरत चेहरा है !"

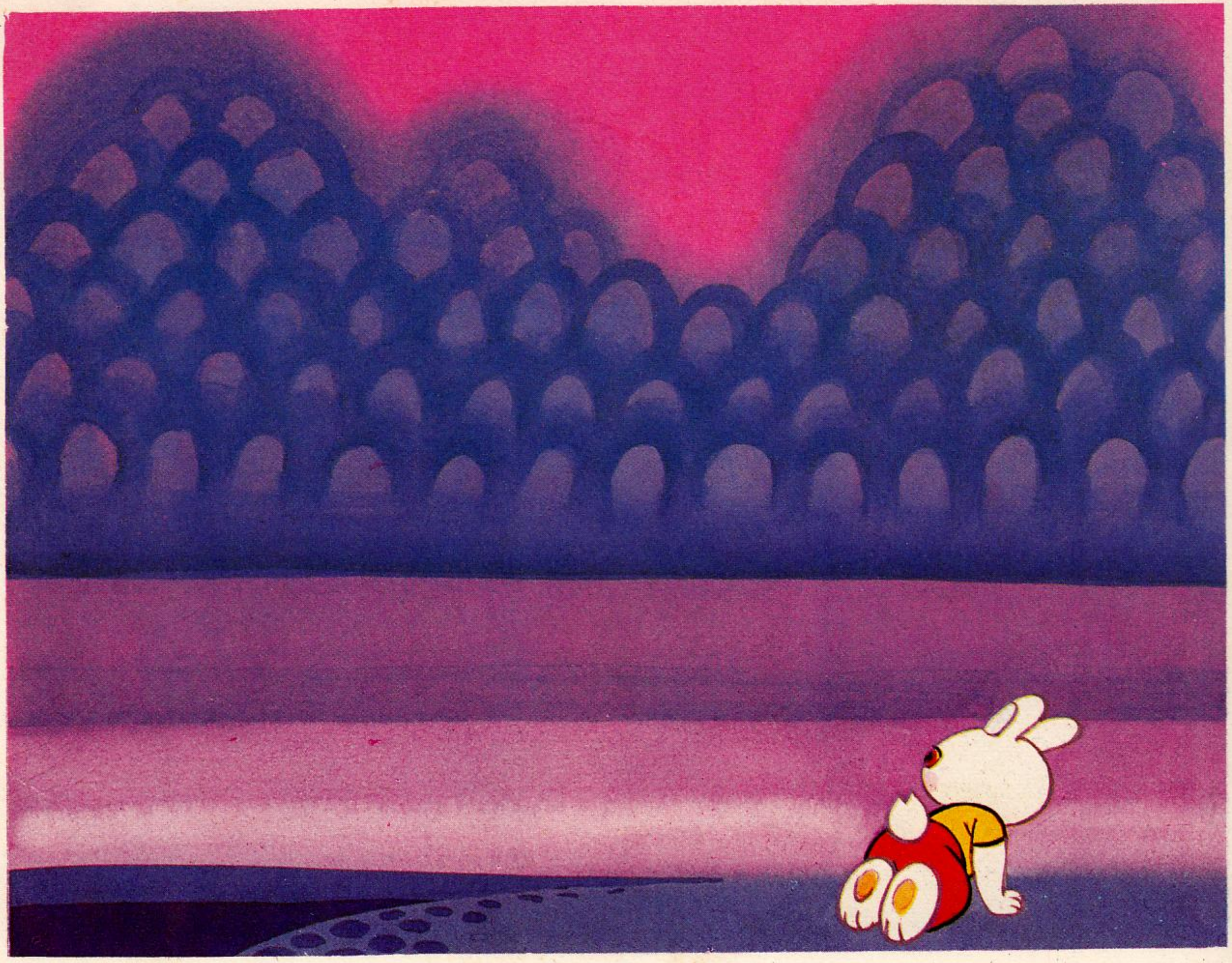

वह मुड़ा और जोर से चिल्लाया "बदसूरत !" साथ ही दूर से भी "बदसूरत" की आवाज सुनाई दी।

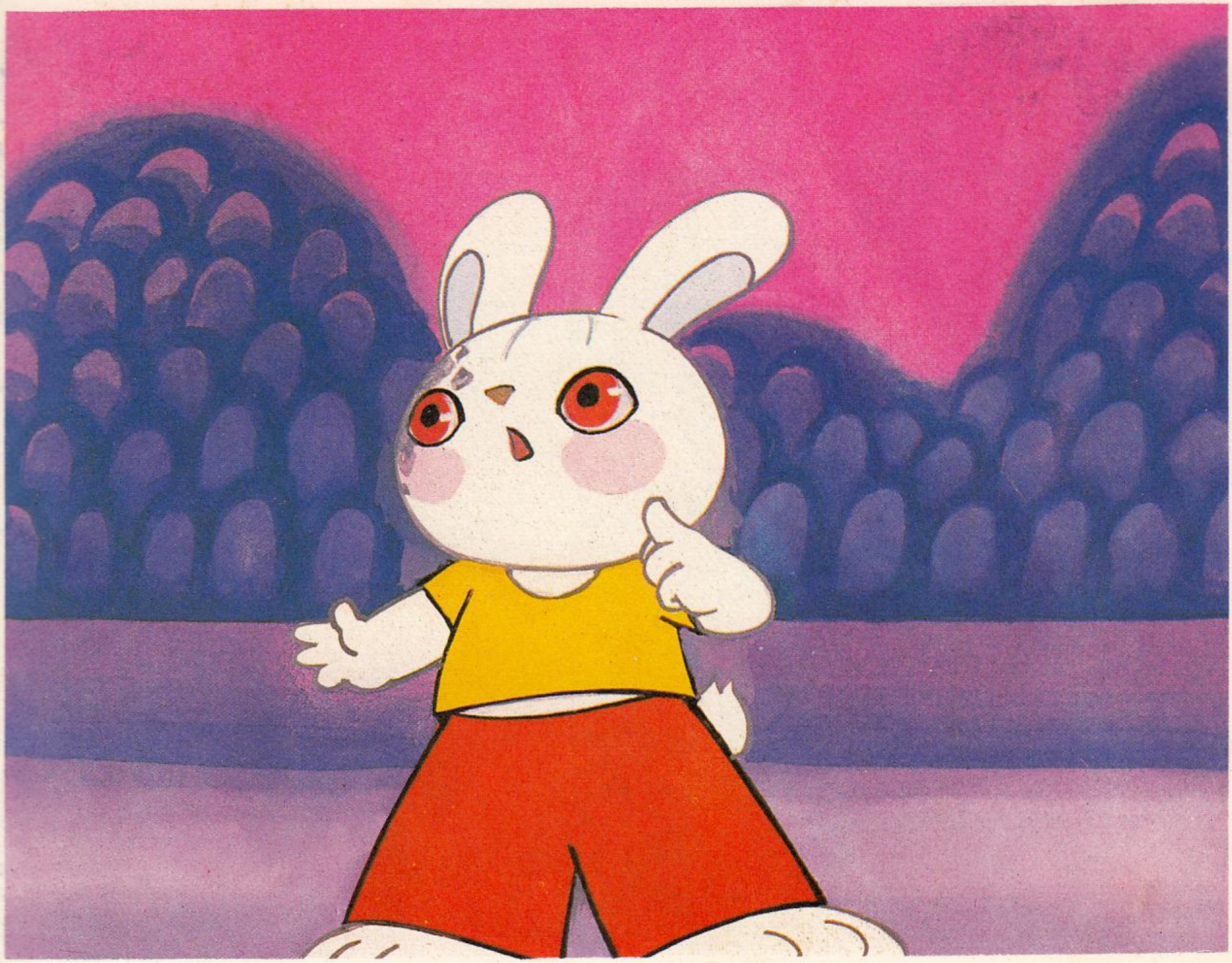

थाओ थाओ उठ खड़ा हुआ और उसने जोर से चिल्लाया : "कौन हो तुम ?" दूर से भी यही आवाज सुनाई दी : "कौन हो तुम ?"

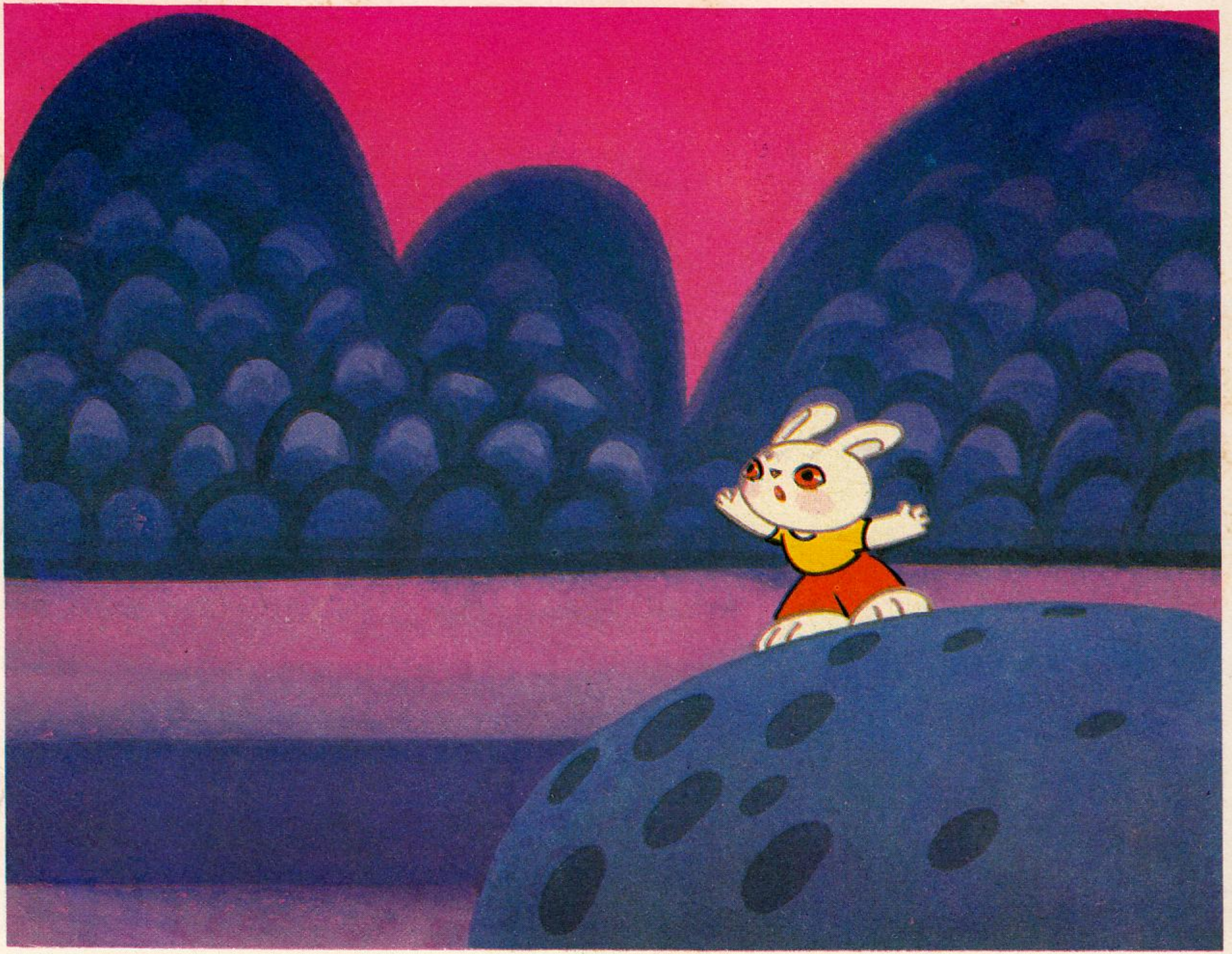

"मैं थाग्रो थाग्रो हूं !" दूर से फिर वही ग्रावाज ग्राई : " मैं थाग्रो थाग्रो हूं !"

"मैं थाम्रो थाम्रो हूं" की म्रावाज घाटी में बार-बार गूंज उठी।

"बदमाश, थाम्रो थाम्रो तो मैं हूं, तुम नहीं !" दूर से किसी ने फिर इसी बात को दोहराया ।

दिन ढल चुका था और अंधेरा छाने लगा था। थाओ थाओ को डर लगने लगा और वह तेजी से अपने घर की तरफ़ भागने लगा।

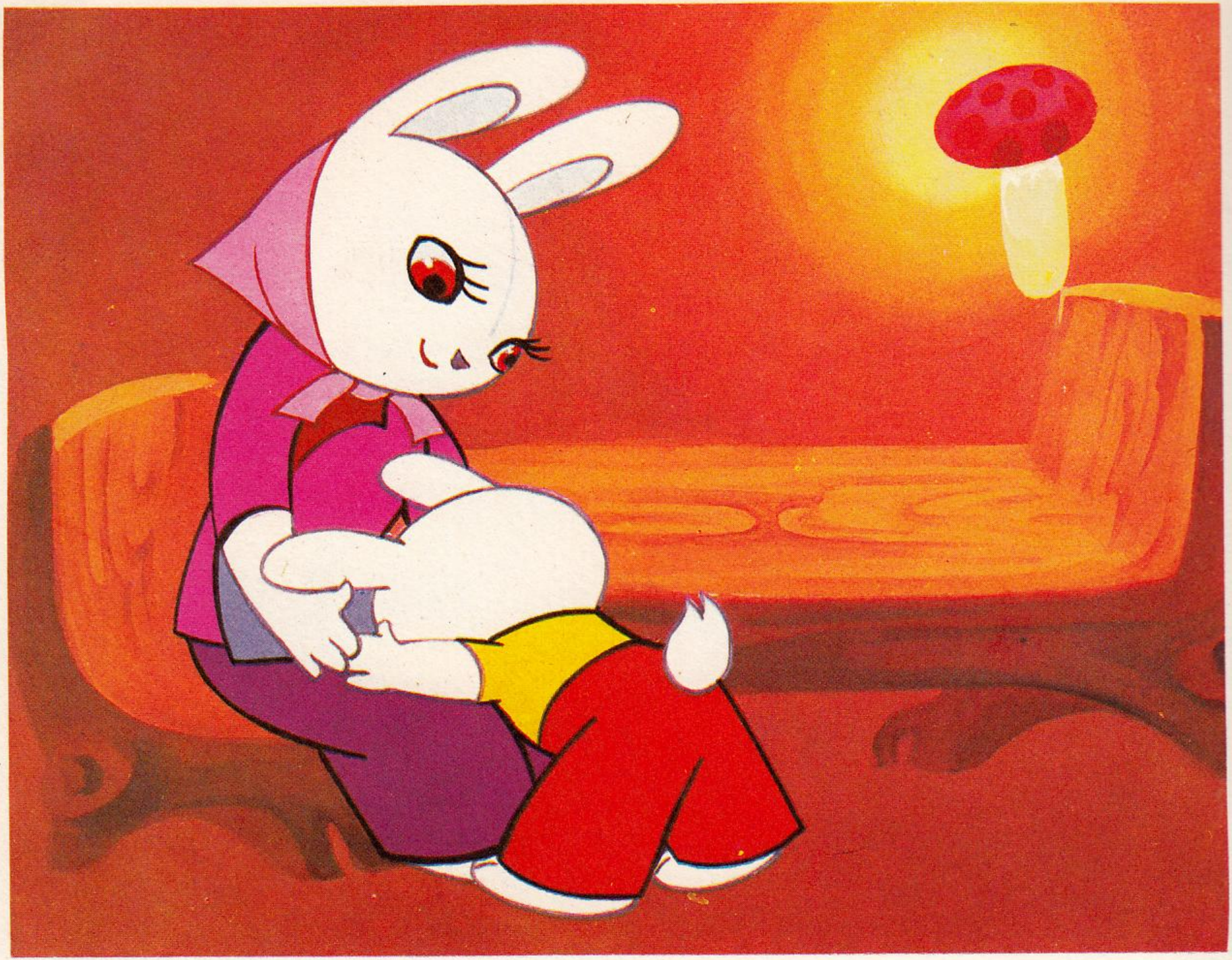

जब थाग्रो थाग्रो घर पहुंचा, तो उसने वह सब जो घाटी में हुग्रा था, ग्रपनी मां को बताया।

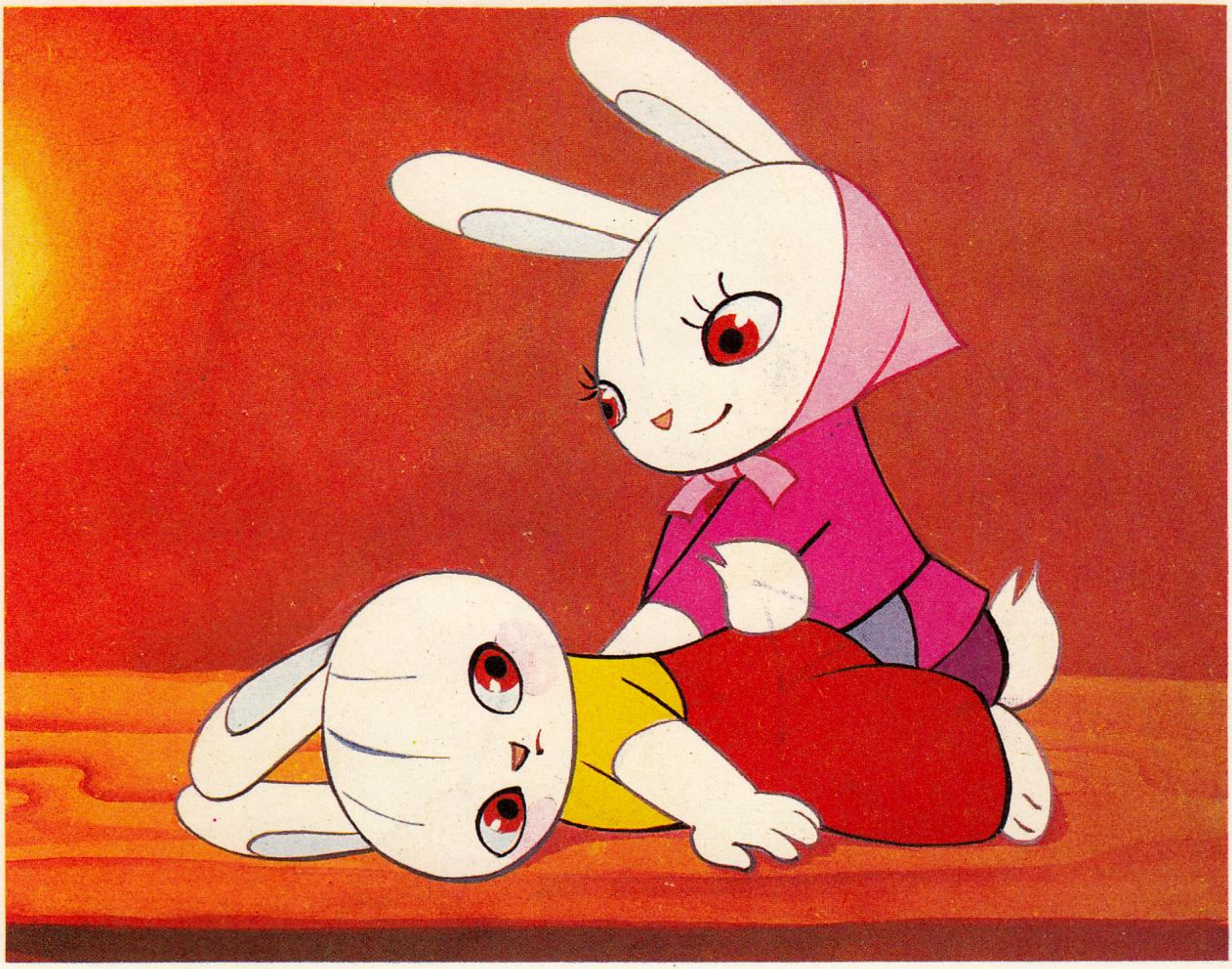

"आज तुम सो जाओ, कल चलकर देखेंगे।" मां ने कहा।

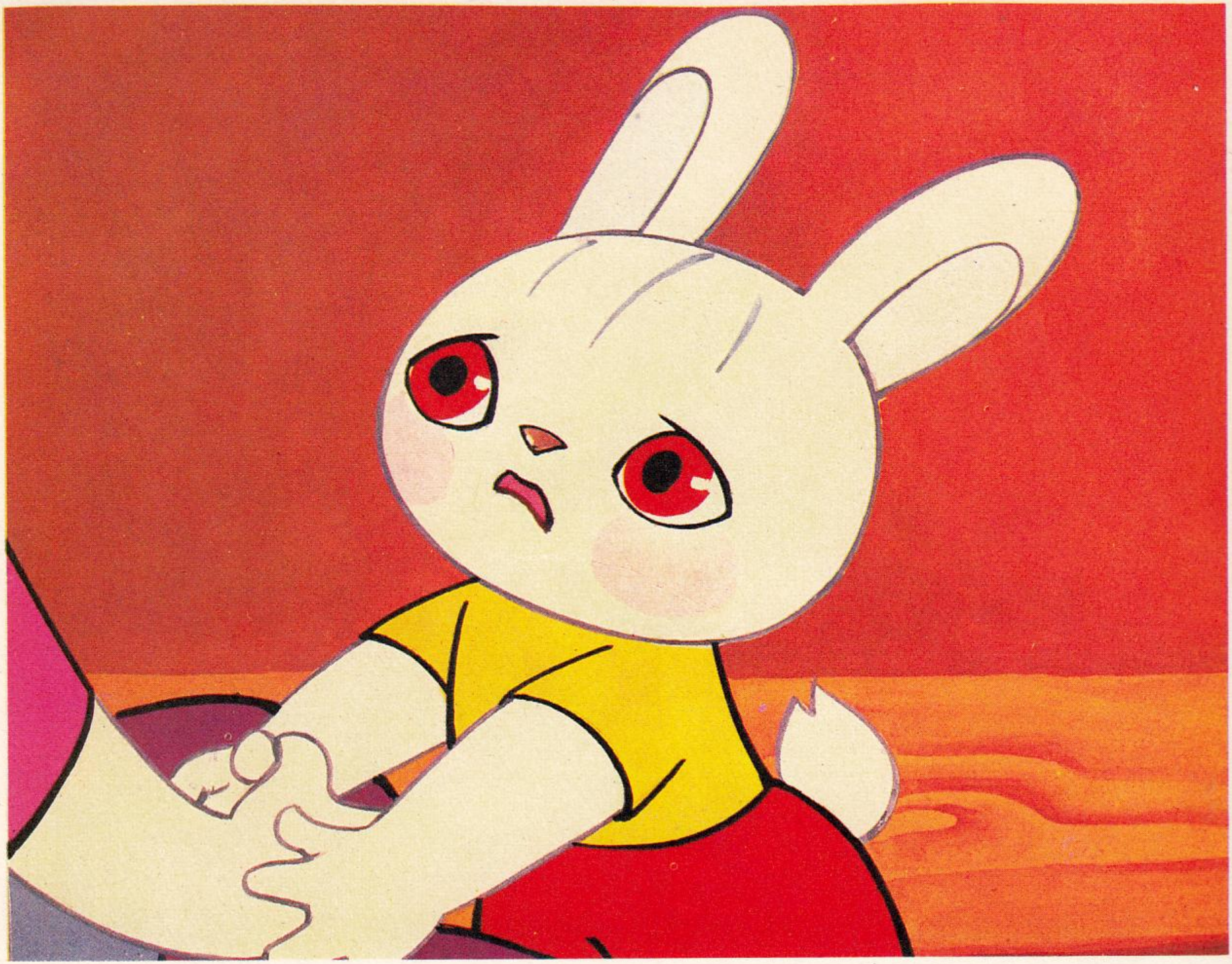

अगली सुबह थाओ थाओ का मन नहीं हो रहा था कि वह घाटी में जाए, इसलिए वह मां का हाथ पकड़कर बोला : "नहीं मां, मैं वहां नहीं जाऊंगा ! वे मुझे गालियां देंगे ।"

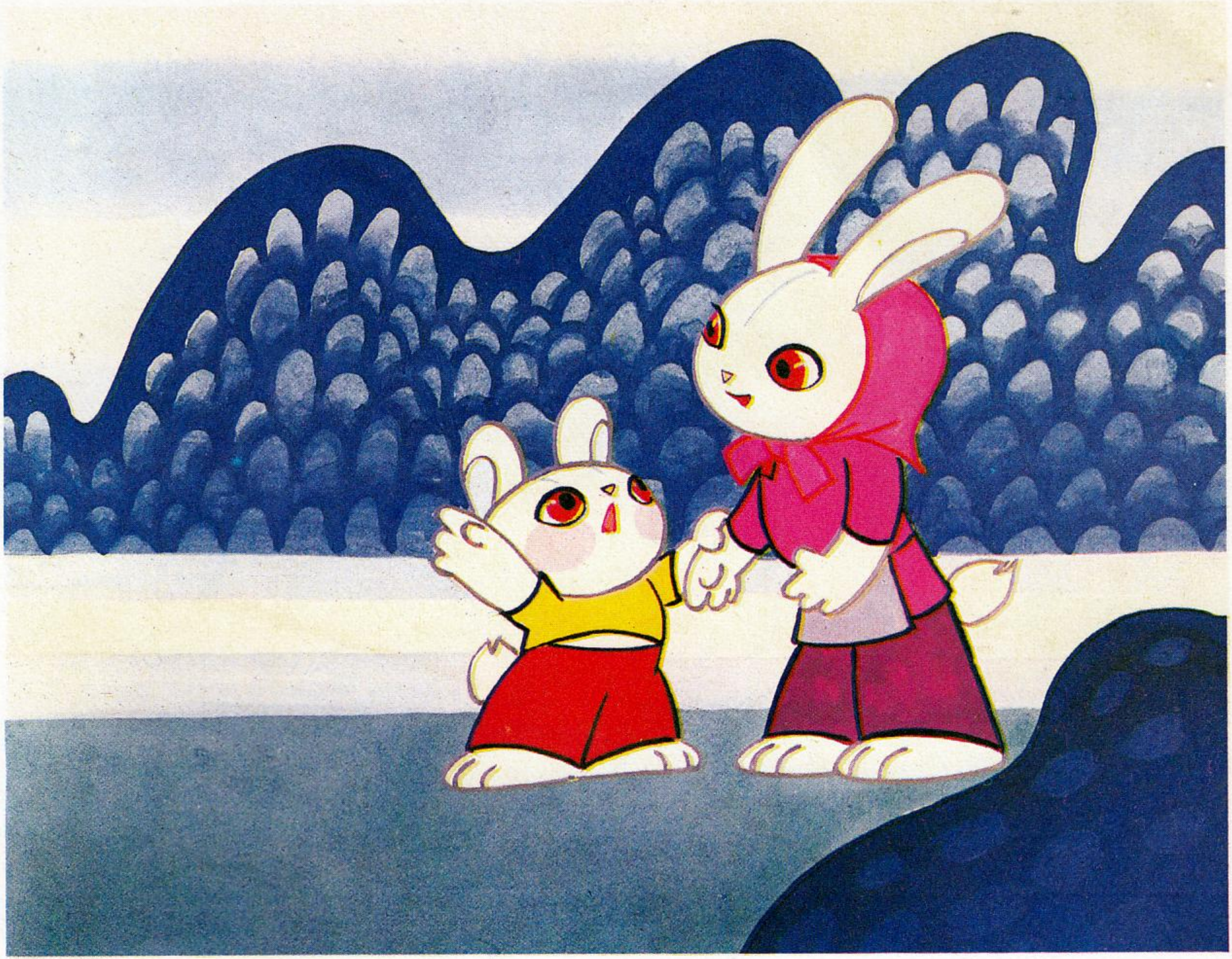

मां ने कहा : "अगर तुम दूसरों से नम्रता से पेश आओगे तो वे तुमको गालियां नहीं देंगे।"
वे दोनों घाटी में आ गए।

थाओ थाओ ने अपनी मां की तरफ देखा। मां ने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा : "जोर से पुकारो !"

थाओ थाओ पहाड़ों की ओर मुंह करके जोर से चिल्लाया : "नमस्ते, दोस्त !"

इसके जवाब में उसकी अपनी ही आवाज घाटी में गूंज उठी : "नमस्ते, दोस्त !" थाओ थाओ खुशी से मुड़कर अपनी मां की तरफ देखने लगा। मां ने उसे बतलाया : "बेटा, इसे गूंज कहते हैं। यह किसी और की नहीं बल्कि तुम्हारी ही आवाज है, जो पहाड़ों से टकराकर सुनाई दे रही है।"

थाम्रो थाम्रो पहाड़ों की तरफ मुंह करके बोला : "माफ कीजिए, मैं ही गलती पर था।"
घाटी फिर एक बार गूंज उठी और थाम्रो थाम्रो को अपनी ही आवाज दुबारा सुनाई दी।

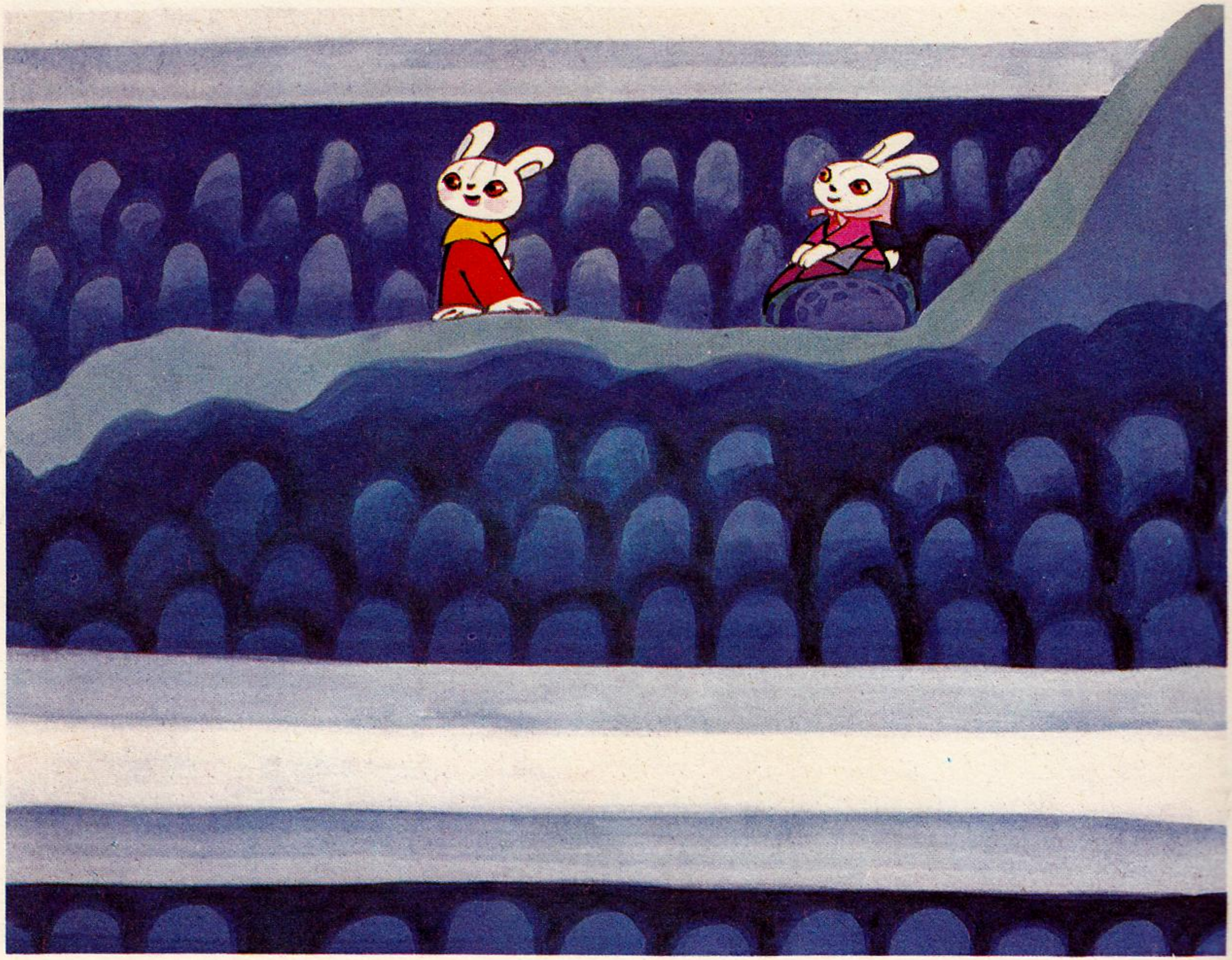

थाओ थाओ बहुत खुश हुआ और जोर से बोला : "अब से हम एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गए !"

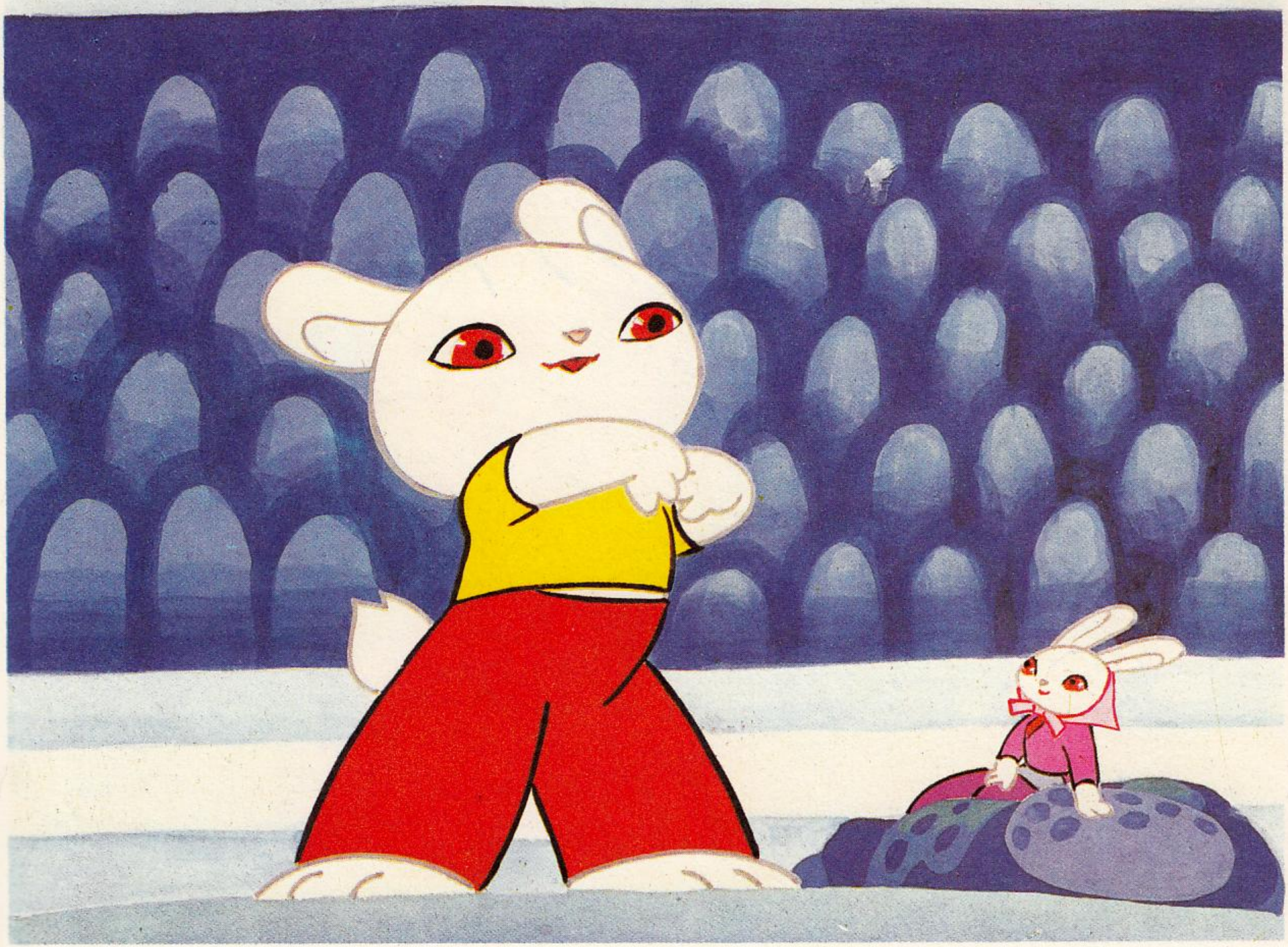

"अब से हम एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गए" की आवाज पहाड़ों में गूंज उठी।

थाओ थाओ की खुशी का ठिकाना न रहा और वह अपनी मां से लिपटकर बोला : "मां, यह गूंज कह रही है कि अगर मैं दूसरों के साथ नम्रता से पेश आऊंगा, तो दूसरे भी मेरे साथ वैसा ही बर्ताव करेंगे।" यह सुनकर मां मुस्करा दी।

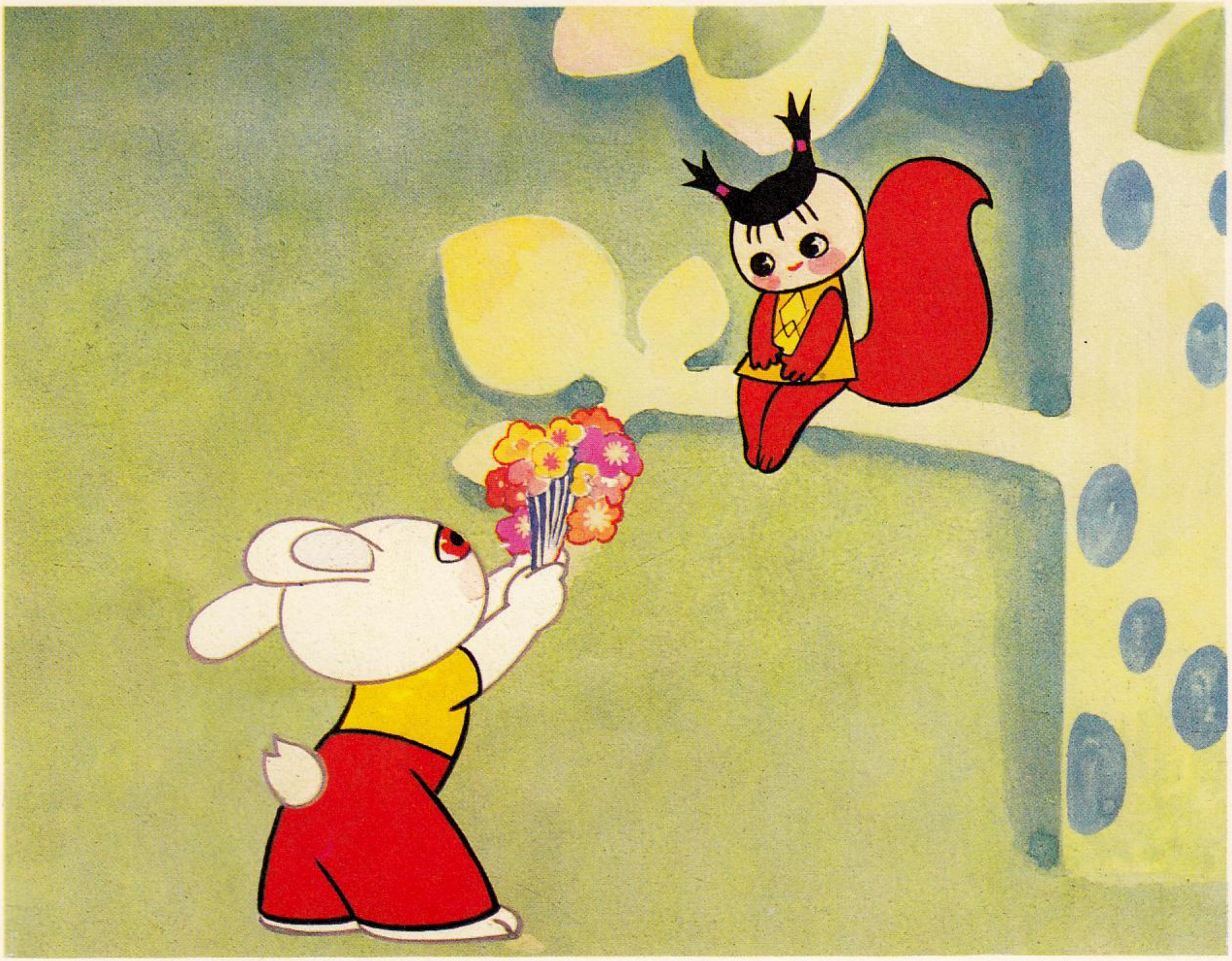

अगले दिन थाओ थाओ ने फूलों का एक गुलदस्ता गिलहरी को भेंट किया। गिलहरी ने खुशी से गुलदस्ता ले लिया और कहा : "धन्यवाद !"

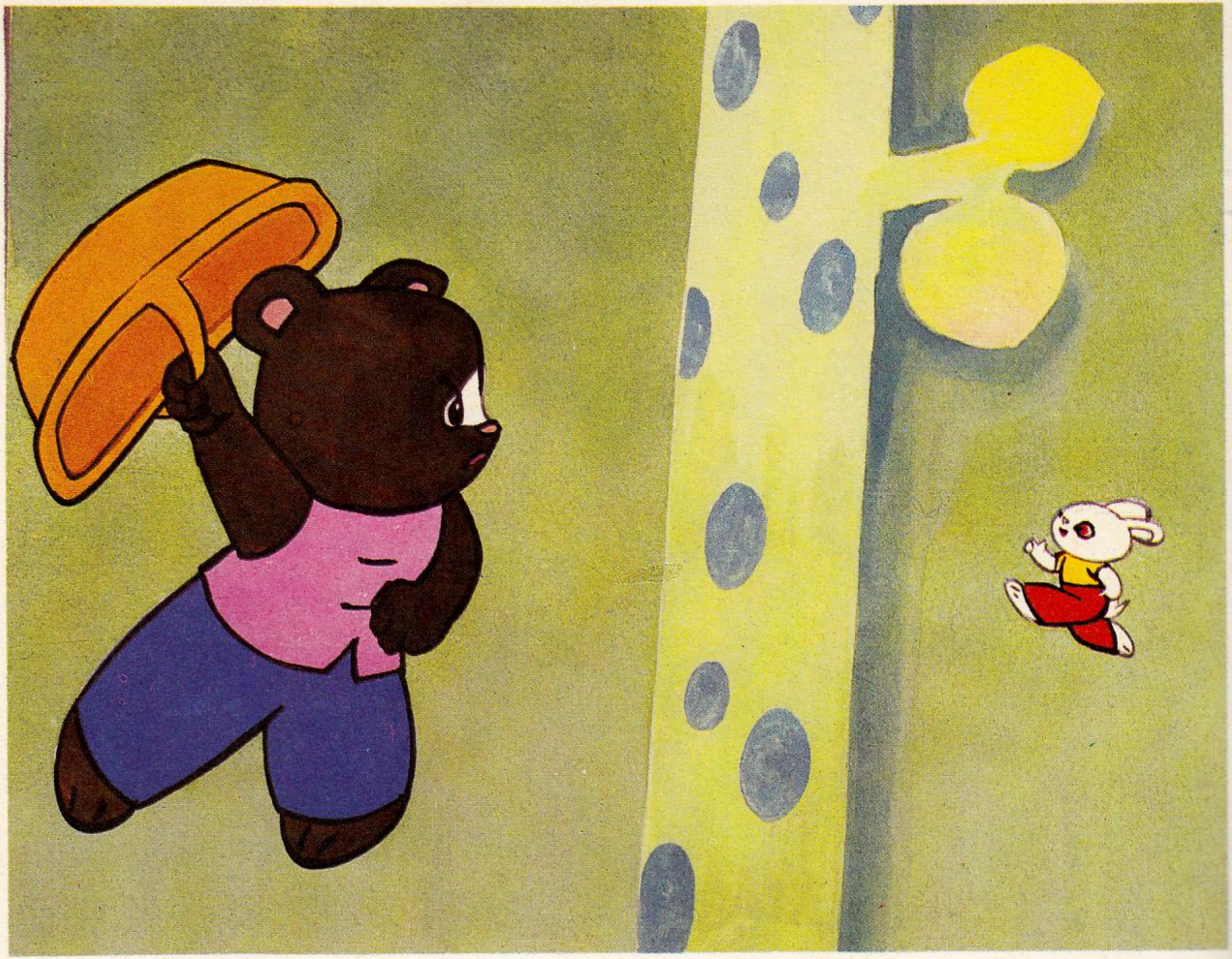

थाओ थाओ फिर भालू के पास गया।

उसने बड़ी नम्रता के साथ भालू से कहा : "मुझे माफ करना,दोस्त !"

भालू ने थाओ थाओ की टोकरी उसको लौटा दी। इसके बाद से वे दोनों एक दूसरे के अच्छे मित्र बन गए।

科学童话

回声

梅婷 编绘

*